वृत्तपत्राचे नांव :– हमारा महानगर
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– मुंबई
वृत्तपत्र पान क :– 6
दिनांक :–22/5/2010

परमात्मा को जानने का उपाय

वेदांत का नियम है कि ज्ञान ज्ञात से अज्ञात की ओर चलता है। अज्ञात को अज्ञात से नहीं जाना जा सकता। जैसे किसी व्यक्ति को पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन जाना है, पर उसे ज्ञात नहीं है कि वह कहां है। हम उसे बताते हैं कि रेलवे स्टेशन श्यामा प्रसाद मुखर्जी मार्ग पर है। लेकिन वह श्यामा प्रसाद मुखर्जी मार्ग भी नहीं जानता, तो उसे रेलवे स्टेशन का पता नहीं चलेगा। यदि हम कहें कि कौड़िया पुल के पास है और वह कौड़िया पुल भी नहीं जानता तो वह स्टेशन का पता नहीं जान पाएगा। पर यदि उसे कहा जाता है कि चांदनी चौक के पास है और वह चांदनी चौक जानता हो, तो झट से समझ जाएगा कि रेलवे स्टेशन कहां है। अज्ञात को अज्ञात से नहीं जाना जा सकता। यह वेदांत का मूल नियम है, ज्ञात–ज्ञान से अज्ञात को जाना जा सकता है। ईश्वर हमारे लिए अज्ञात है। हमने ईश्वर को नहीं देखा। उसके बारे में समझाने के लिए आध्यात्मिक गुरुओं द्वारा कहा जाता है, ईश्वर अनंत है, वह बुद्धि से परे है, वह सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है – आदि–आदि। इस तरह उस अज्ञात को समझाने के लिए अज्ञात शब्दावली का ही प्रयोग किया जाता है। यही कारण है कि अधिकांश लोग ईश्वर के स्वरूप को नहीं जान पाते और भ्रम की स्थिति बनी रहती है। ईश्वर के विषय में जो कुछ भी कहा जाता है, हम उसे मान लेते हैं, तर्क नहीं करते। गीता में कृष्ण कहते हैं कि हर अच्छे शिष्य में तीन गुण होने चाहिए –1. सेवा 2. श्रद्धा 3. प्रश्न का भाव। इनमें प्रश्न का भाव, प्रश्न की उत्सुकता सबसे महत्वपूर्ण है। हम गणित, विज्ञान आदि विषयों में तो प्रश्न पूछ सकते हैं, लेकिन जहां अध्यात्म की बात आ जाती है तो महाराज जी ने जो बोल दिया हम उसे स्वीकार कर लेते हैं।

जब कोई कहता है कि ईश्वर सर्वव्यापी है–तो उसके सर्वव्यापी होने से क्या अभिप्राय है? कहा जाता है कि ईश्वर निराकार है, तो निराकार को हम कैसे देख–समझ सकते हैं? अब समस्या यह है कि एक आम आदमी को कैसे समझाया जाए कि ईश्वर है। अक्सर लोग प्रश्न करते हैं कि ईश्वर है इसका क्या प्रमाण है? जो नास्तिक हैं वे ईश्वर को अस्वीकारते हैं। तब वेदांत के नियम के अनुसार कुछ ज्ञात चीजों का सहारा लिया जाए। भौतिक विज्ञान में एक नियम है कि परिवर्तन को तभी देखा जा सकता है जब कोई अपरिवर्तनीय चीज हो। जैसे हम 600 मील प्रति घंटा की गति से चल रहे हवाई जहाज में बैठे हुए हैं। बाहर खुला आकाश है। देखते हैं तो ऐसा आभास होता है कि हवाई जहाज रुका हुआ है, जबकि उसकी गति 600 मील प्रति घंटा है। अपने शरीर का उदाहरण लें। बचपन से जवानी, जवानी से बुढ़ापे तक शरीर में कितना परिवर्तन आया। लंबाई वजन सब में परिवर्तन आया। नाखून बढ़े। बाल बढ़े। बचपन का मन, युवावस्था का मन, वृद्धावस्था का मन बदलता गया। हमने जाना कि मैं शरीर नहीं हूं क्योंकि शरीर में परिवर्तन होता रहता है। मैं बुद्धि भी आयु के साथ–साथ परिवर्तित होती रहती है। मैं मन नहीं हूं क्योंकि मन भी परिवर्तित होता रहता है। अतः मेरे अंदर वह कौन सी चीज है जो अपरिवर्तनीय है। वह आत्मा है। इसी तरह हम परमात्मा को भी जान सकते हैं।